AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing *Impact Factor: 5.0*
Vol (3), Issue (4), October-December 2026 *ISSN: 3048-7951*

आदिवासी महिलाओं की स्थिति एवं कृषि में उनका योगदान

डॉज्ञान माला सिंह .[1], डॉविनय कुमार सिंह .[2], श्री प्रियेश प्रकाश सिंह[3] एवं श्री बापू हिहोर[4]

DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.24547747

Review: 01/10/2026 **Acceptance: 08/10/2026** **Publication: 26/11/2026**

सार:

प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्द-ेश्य आदिवासी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति तथा कृषि क्षेत्र में उनके बहुआयामी योगदान का अध्ययन करना है। आदिवासी महिलाएँ कृषि उत्पादन, बीज चयन एवं संरक्षण, बुवाई, रोपाई, निराईगुड़ाई-, फसल कटाई, मड़ाई तथा भंडारण जैसी विभिन्न कृषि गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इसके अतिरिक्त, वे पशुपालन, लघु वनोपज संग्रहण, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, प्राकृतिक खेती, जैविक खाद निर्माण, वर्मी कम्पोस्ट तथा मशरूम उत्पादन जैसी गतिविधियों के माध्यम से परिवार की आजीविका और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाती हैं। विशेष रूप से मध्य प्रदेश के झाबुआ, अलीराजपुर, धार एवं बड़वानी जैसे आदिवासी बहुल क्षेत्रों में महिलाओं का कृषि एवं प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित आजीविका संबंधी गतिविधियों में उल्लेखनीय योगदान है। इसके बावजूद उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमि अधिकार, तकनीकी प्रशिक्षण, वित्तीय सुविधाओं, बाजार तक पहुँच तथा निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में महिला स्वयं सहायता समूहों, किसान उत्पादक संगठनों, कृषि यंत्रीकरण, कौशल विकास, डिजिटल विपणन तथा जलवायुअन-ुकूल कृषि तकनीकों के माध्यम से आदिवासी महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण की संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है। निष्कर्षतः आदिवासी महिलाओं को केवल कृषि श्रमिक के रूप में नहीं, बल्कि महिला किसान, उद्यमी एवं निर्णयकर्ता के रूप में पहचान और समान अवसर प्रदान करना आवश्यक है। इससे टिकाऊ कृषि, खाद्य सुरक्षा, जैव विविधता संरक्षण तथा समावेशी ग्रामीण विकास को बढ़ावा मिल सकता है।

मुख्य शब्द: आदिवासी महिलाएँ, महिला सशक्तिकरण, कृषि में महिलाओं का योगदान, पारंपरिक कृषि ज्ञान, जैविक खेती, स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण विकास।

1. प्रस्तावना

भारत विविधताओं वाला देश है, जहाँ विभिन्न जनजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट संस्कृति, परंपराओं, भाषा, रहनसहन और - प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित जीवनशैली के लिए जाने जाते हैं। आदिवासी समुदायों का जीवन लंबे समय से जंगल, भूमि, जल और कृषि संसाधनों से जुड़ा रहा है। इस सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था में आदिवासी महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वे परिवार, कृषि, पशुपालन, वनोपज संग्रहण, खाद्य सुरक्षा तथा घरेलू अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में महिला केवल परिवार की देखभाल करने वाली सदस्य नहीं है, बल्कि वह खेत की तैयारी से लेकर फसल उत्पादन, कटाई, प्रसंस्करण, भंडारण और विपणन तक अनेक गतिविधियों में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेती है। इसके अतिरिक्त पशुपालन, मुर्गीपालन, बकरीपालन, मशरूम उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट, लघु वनोपज संग्रहण तथा घरेलू प्रसंस्करण जैसे कार्यों में भी महिलाओं की महत्वपूर्ण भागीदारी रहती है। विशेष रूप से मध्य प्रदेश के आदिवासी बहुल जिलों जैसे झाबुआ, अलीराजपुर, धार, बड़वानी और आसपास के क्षेत्रों में महिलाओं की कृषि एवं प्राकृतिक संसाधन आधारित आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई देती है। कई परिवारों में पुरुषों के रोजगार अथवा अन्य कारणों से बाहर रहने के

दौरान कृषि कार्यों की जिम्मेदारी महिलाओं पर अधिक हो जाती है। आदिवासी महिलाओं की स्थिति को समझने के लिए केवल उनकी कृषि भूमिका को देखना पर्याप्त नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आय, भूमि एवं संपत्ति पर अधिकार, तकनीकी ज्ञान, बाजार तक पहुंच, वित्तीय समावेशन तथा निर्णय लेने में भागीदारी जैसे पहलुओं का भी अध्ययन आवश्यक है।

2. आदिवासी महिलाओं की सामाजिक स्थिति

आदिवासी समाज में महिलाओं की सामाजिक स्थिति कई दृष्टियों से विशिष्ट है। वे परिवार एवं समुदाय की आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रहती हैं। अनेक जनजातीय समुदायों में महिलाएँ दैनिक जीवन और उत्पादन व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा होती हैं। परंपरागत रूप से आदिवासी महिलाएँ प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग और संरक्षण से संबंधित व्यावहारिक ज्ञान रखती हैं। वे स्थानीय पौधों, खाद्य पदार्थों, औषधीय वनस्पतियों, बीजों तथा पशुधन के संबंध में पीढ़ियों से संचित ज्ञान का उपयोग करती आई हैं। हालाँकि सामाजिक भागीदारी के बावजूद उन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, परिवहन, संचार और रोजगार के अवसरों की सीमित उपलब्धता महिलाओं के विकास को प्रभावित कर सकती है।

3. आदिवासी महिलाओं की सामाजिक स्थिति के प्रमुख पहलू

- परिवार की आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी।
- कृषि एवं पशुपालन में महत्वपूर्ण भूमिका।
- पारंपरिक ज्ञान एवं स्थानीय जैव विविधता की जानकारी।
- घरेलू एवं सामुदायिक कार्यों की दोहरी जिम्मेदारी।
- शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण तक सीमित पहुंच वाले क्षेत्र।
- स्वास्थ्य एवं पोषण संबंधी चुनौतियाँ।
- भूमि और संपत्ति के स्वामित्व में सीमित भागीदारी।
- बाजार एवं वित्तीय संस्थाओं तक पहुंच में कठिनाई।
- निर्णय लेने की प्रक्रिया में क्षेत्र एवं परिवार के अनुसार भिन्नता।
- स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से सामूहिक आर्थिक गतिविधियों की बढ़ती संभावना।

4. आदिवासी महिलाओं की आर्थिक स्थिति

आदिवासी परिवारों की आजीविका में कृषि, पशुपालन, मजदूरी और वनोपज प्रमुख आधार रहे हैं। इनमें महिलाओं की प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष भागीदारी बहुत अधिक होती है। महिलाएँ खेत में श्रम करने के साथसाथ घर के पशुओं की देखभाल-, चारा संग्रहण, खाद तैयार करना, बीजों का संरक्षण, अनाज की सफाई एवं भंडारण तथा कृषि उत्पादों के घरेलू प्रसंस्करण में योगदान देती हैं। कई स्थानों पर महिलाओं द्वारा संचालित छोटे व्यवसाय परिवार की आय का महत्वपूर्ण स्रोत बन सकते हैं। उदाहरण के लिए: बकरी पालन, मुर्गी पालन, डेयरी, मशरूम उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन, जैविकप्राकृतिक कृषि आधारित उत्पाद/,

- सब्जी उत्पादन

- फल एवं पौध उत्पादन
- लघु वनोपज का संग्रहण एवं प्रसंस्करण
- खाद्य पदार्थों का घरेलू प्रसंस्करण
- हस्तशिल्प एवं पारंपरिक उत्पाद

महिलाओं की आय में वृद्धि से परिवार की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, बच्चों की शिक्षा तथा घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति में सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

5. कृषि में आदिवासी महिलाओं की भूमिका

कृषि में महिलाओं का योगदान बहुआयामी है। खेती की प्रत्येक अवस्था में उनकी भूमिका अलगअलग रूप में दिखाई देती - है।





4.1 खेत की तैयारी

खेत की तैयारी में पुरुषों की भूमिका सामान्यतः अधिक दिखाई देती है, लेकिन महिलाएँ खेत से खरपतवार एवं अवशेष हटाने, बीज एवं कृषि सामग्री तैयार करने तथा खेत संबंधी अन्य कार्यों में भाग लेती हैं। कृषि कार्यों की योजना बनाने में महिलाओं का स्थानीय अनुभव उपयोगी होता है। वे मौसम, मिट्टी की नमी, स्थानीय बीजों तथा उपलब्ध संसाधनों के आधार पर खेती से संबंधित व्यावहारिक निर्णयों में योगदान देती हैं।

4.2 बीज का चयन एवं संरक्षण

आदिवासी क्षेत्रों में पारंपरिक बीजों का संरक्षण एक महत्वपूर्ण कार्य है। महिलाएँ घर में उपलब्ध बीजों को अलग करके अगले मौसम के लिए सुरक्षित रखने की परंपरा का पालन करती रही हैं। बीज संरक्षण में निम्न कार्य शामिल हैं।

- अच्छे पौधों से बीज का चयन।
- बीजों की सफाई।
- धूप में सुखाना।
- स्थानीय सामग्री से बीज उपचार।
- मिट्टीकपड़े के पात्र में भंडारण।/लकड़ी/बांस/
- कीट एवं नमी से सुरक्षा।
- अगले मौसम के लिए बीज सुरक्षित रखना।

यह पारंपरिक ज्ञान कृषि जैव विविधता के संरक्षण में योगदान देता है।

5. बुवाई एवं रोपाई में महिलाओं का योगदान

बुवाई एवं रोपाई कृषि के महत्वपूर्ण चरण हैं। विशेषकर धान, सब्जियों और अन्य फसलों में महिलाओं की श्रम भागीदारी महत्वपूर्ण रहती है। महिलाएँ बीजों की तैयारी, पौध तैयार करने, रोपाई तथा पौधों की प्रारंभिक देखभाल में योगदान देती हैं। रोपाई के दौरान पौधों की उचित दूरी और संख्या बनाए रखने का कार्य भी महिलाओं द्वारा किया जाता है। इस प्रकार फसल की स्थापना में उनका योगदान प्रत्यक्ष होता है।

6. निराईगुड़ाई एवं खरपतवार प्रबंधन-

आदिवासी महिलाओं के कृषि श्रम में निराई आधारित खेती में खरपतवार तेजी से गुड़ाई प्रमुख कार्यों में से एक है। वर्षा-बढ़ने के कारण फसल की प्रारंभिक अवस्था में खरपतवार नियंत्रण आवश्यक होता ह ै। महिलाएँ हाथ से खरपतवार निकालने, गुड़ाई करने तथा फसल के आसपास की भूमि को साफ रखने का कार्य करती हैं। इस कार्य में उनका स्थानीय अनुभव उपयोगी होता है क्योंकि वे कई खरपतवारों को पहचानने के साथसाथ उनके उपयोगों से भी परिचित होती हैं।-

7. फसल कटाई एवं मड़ाई में योगदान

फसल की परिपक्वता के बाद कटाई, फसल को एकत्र करना, सुखाना, मड़ाई, सफाई और भंडारण में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। कटाई के बाद अनाज की सफाई और सुरक्षित भंडारण परिवार की खाद्य सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के परिवारों में महिलाओं का श्रम कृषि उत्पादन लागत को प्रभावित करता है और परिवार की कृषि अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

8. पशुपालन में आदिवासी महिलाओं की भूमिका

कृषि के साथ पशुपालन आदिवासी परिवारों की आय और पोषण सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार है। पशुओं की दैनिक देखभाल में महिलाओं की बड़ी भूमिका होती है। वे सामान्यतः निम्न कार्य करती हैं:

- पशुओं को चारा एवं पानी देना।
- पशु आवास की सफाई।
- दूध निकालना।
- बछड़ों एवं छोटे पशुओं की देखभाल।
- मुर्गी एवं बकरी पालन।
- पशु उत्पादों का घरेलू उपयोग।
- पशु अपशिष्ट से जैविक खाद तैयार करना।

पशुपालन और कृषि एकदूसरे से जुड़े हुए हैं। पशुओं से प्राप्त गोबर का उपयोग कम्पोस्ट तथा जैविक खाद बनाने में - किया जा सकता है, जबकि फसल अवशेष पशुओं के चारे के रूप में उपयोग किए जा सकते हैं।

9. लघु वनोपज एवं प्राकृतिक संसाधनों में योगदान

आदिवासी महिलाओं का जीवन वनों एवं प्राकृतिक संसाधनों से लंबे समय से जुड़ा रहा है। महिलाएँ विभिन्न प्रकार की लघु वनोपज के संग्रहण, प्राथमिक प्रसंस्करण और घरेलू उपयोग में योगदान करती हैं। उदाहरण के रूप मेंमहुआ:, तेंदूपत्ता, इमली, चार, आँवला, हर्रा, बहेरा, विभिन्न खाद्य एवं औषधीय वनस्पतियाँ। महिलाओं द्वारा इन उत्पादों का संग्रहण और प्राथमिक प्रसंस्करण परिवार की आय में योगदान कर सकता है। यदि इन उत्पादों का मूल्य संवर्धन और उचित विपणन किया जाए तो ग्रामीण महिलाओं की आय बढ़ाने के अवसर उत्पन्न हो सकते हैं।

10. खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में भूमिका

आदिवासी महिलाओं की एक महत्वपूर्ण भूमिका परिवार की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना है। वे स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अनाज, दाल, सब्जियों, फल, कंदमूल-, पत्तेदार सब्जियों और अन्य खाद्य पदार्थों का उपयोग करती हैं। महिलाओं का पारंपरिक ज्ञान स्थानीय खाद्य जैव विविधता को बनाए रखने में सहायक हो सकता है। घर के आसपास पोषण वाटिका स्थापित करके महिलाएँ विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ और फल उगा सकती हैं। इससे परिवार को ताजा एवं विविध खाद्य पदार्थ प्राप्त होते हैं और बाजार पर निर्भरता कम करने में सहायता मिल सकती है।

11. प्राकृतिक एवं जैविक खेती में महिलाओं की भूमिका

प्राकृतिक खेती एवं जैविक खेती में स्थानीय संसाधनों का उपयोग महत्वपूर्ण होता है। आदिवासी क्षेत्रों में उपलब्ध गोबर, गोमूत्र, फसल अवशेष, पत्तियाँ और जैविक पदार्थों का उपयोग विभिन्न कृषि इनपुट तैयार करने में किया जा सकता है। महिलाएँ निम्न गतिविधियों में भाग ले सकती हैं:

- वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन
- कम्पोस्ट खाद निर्माण
- जैविक अपशिष्ट का प्रबंधन
- बीज उपचार
- जैविक घोल तैयार करना
- पोषण वाटिका
- प्राकृतिक कृषि आधारित उत्पादन
- कृषि अवशेषों का पुनः उपयोग

ऐसी गतिविधियाँ महिलाओं को कृषि के साथ अतिरिक्त आय के अवसर भी प्रदान कर सकती हैं।

12. वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन में महिलाओं की संभावनाएँ

वर्मी कम्पोस्ट एक ऐसा उद्यम है जिसे सीमित स्थान और स्थानीय संसाधनों के आधार पर शुरू किया जा सकता है। आदिवासी महिलाओं के लिए यह कृषि आधारित स्वरोजगार का एक उपयोगी विकल्प हो सकता है। वर्मी कम्पोस्ट इकाई में मुख्यतः गोबर, कृषि अवशेष और जैविक पदार्थों का उपयोग किया जाता है। तैयार खाद का उपयोग खेत एवं पोषण वाटिका

में किया जा सकता है तथा अतिरिक्त उत्पादन को बाजार में बेचा जा सकता है। महिला स्वयं सहायता समूह सामूहिक रूप से वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन करके इसे स्थानीय किसानों तक पहुंचा सकते हैं।

13. मशरूम उत्पादन में महिलाओं की भूमिका

मशरूम उत्पादन कम भूमि में किया जाने वाला कृषि आधारित उद्यम है। उचित प्रशिक्षण, स्वच्छता, तापमान एवं आर्द्रता प्रबंधन के साथ इसे छोटे स्तर पर शुरू किया जा सकता है। महिलाओं के लिए मशरूम उत्पादन के प्रमुख लाभ हैं:

- कम भूमि की आवश्यकता।
- कृषि अवशेषों का उपयोग।
- अपेक्षाकृत कम अवधि में उत्पादन।
- घरेलू स्तर पर प्रारंभ करने की संभावना।
- स्थानीय बाजार में बिक्री की संभावना।
- परिवार की आय में अतिरिक्त योगदान।

मशरूम के उत्पादन के साथसाथ पैकिंग और मूल्य संवर्धन से भी अतिरिक्त आय के अवसर विकसित किए जा सकते हैं।-

14. स्वयं सहायता समूहों की भूमिका

आदिवासी महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। महिलाएँ समूह बनाकर बचत, ऋण, प्रशिक्षण और सामूहिक उद्यम जैसी गतिविधियाँ संचालित कर सकती हैं।

महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा किए जा सकने वाले कार्य

1. सब्जी उत्पादन
2. मशरूम उत्पादन
3. वर्मी कम्पोस्ट
4. बकरी पालन
5. मुर्गी पालन
6. खाद्य प्रसंस्करण
7. मसाला निर्माण
8. स्थानीय उत्पादों की पैकिंग
9. लघु वनोपज का मूल्य संवर्धन
10. कृषि उत्पादों का सामूहिक विपणन

समूह आधारित गतिविधियों से महिलाओं में नेतृत्व, वित्तीय प्रबंधन और सामूहिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित हो सकती है।

15. कृषि मूल्य श्रृंखला में महिलाओं की भागीदारी

कृषि में महिलाओं का योगदान केवल खेत में श्रम तक सीमित नहीं होना चाहिए। उन्हें कृषि मूल्य श्रृंखला के विभिन्न चरणों में शामिल करना आवश्यक है।

उत्पादन → संग्रहण → प्रसंस्करण → पैकेजिंग → ब्रांडिंग → विपणन → उपभोक्ता।

यदि महिला किसान उत्पाद का प्रसंस्करण और विपणन स्वयं करती हैं, तो कृषि उत्पाद का अधिक मूल्य प्राप्त करने की संभावना बढ़ती है। उदाहरण के लिए, कच्ची हल्दी बेचने की बजाय हल्दी पाउडर, स्थानीय दालों की सफाईपैकिंग-, फल से जैमअचार तथा लघु वनोपज से मूल्यवर्धित उत्/पाद तैयार किए जा सकते हैं।

16. आदिवासी महिलाओं के सामने प्रमुख चुनौतियाँ

कृषि एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद आदिवासी महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

16.1 शिक्षा की सीमित उपलब्धता

दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच एक चुनौती हो सकती है। कृषि एवं उद्यमिता संबंधी तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव भी महिलाओं की आय क्षमता को प्रभावित करता है।

16.2 स्वास्थ्य एवं पोषण

दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच, मातृ एवं बाल स्वास्थ्य, पोषण तथा स्वच्छ पेयजल जैसे मुद्दे महिलाओं की उत्पादकता और जीवन गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं।

16.3 भूमि पर अधिकार

कई महिला किसान कृषि कार्यों में सक्रिय होती हैं, लेकिन भूमि के स्वामित्व और दस्तावेजों में उनका नाम होना आवश्यक रूप से सुनिश्चित नहीं होता। भूमि पर अधिकार होने से कृषि योजनाओं, ऋण एवं अन्य संस्थागत सुविधाओं तक उनकी पहुंच मजबूत हो सकती है।

16.4 बाजार की समस्या

कृषि उत्पादों को उचित मूल्य पर बेचने के लिए बाजार, परिवहन, भंडारण और मूल्य संबंधी जानकारी आवश्यक है। छोटे उत्पादकों के लिए यह विशेष चुनौती हो सकती है।

16.5 तकनीकी जानकारी का अभाव

उन्नत बीज, संतुलित पोषण, कीट एवं रोग प्रबंधन, मौसम आधारित कृषि सलाह, कृषि यंत्र तथा मूल्य संवर्धन तकनीक की जानकारी बढ़ाने की आवश्यकता है।

16.6 कार्य का दोहरा बोझ

महिलाएँ खेत के कार्यों के साथ घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल, पशुपालन, ईंधन एवं पानी की व्यवस्था जैसे कार्य भी करती हैं। इससे उनके समय और श्रम पर अतिरिक्त भार पड़ता है।

17. कृषि यंत्रीकरण और महिला श्रम

महिलाओं के लिए उपयुक्त कृषि यंत्रों का उपयोग उनके श्रम और समय को कम कर सकता है। महिला- अनुकूल उपकरणों में निम्नशामिल हो सकते हैं:

- हल्के खरपतवार नियंत्रण उपकरण
- सीड ड्रिलप्लांटर/
- मक्का एवं अन्य फसलों के लिए छोटे यंत्र
- फसल कटाई उपकरण
- चारा काटने की मशीन
- दालअनाज सफाई उपकरण/
- छोटे प्रसंस्करण उपकरण
- स्प्रेयर
- मिनी मिलिंग एवं ग्रेडिंग मशीन

कृषि यंत्रीकरण का उद्देश्य महिलाओं को कृषि से हटाना नहीं, बल्कि कठिन एवं श्रमसाध्य कार्यों को सरल बनाना होना चाहिए।

18. मौसम आधारित कृषि सलाह में महिलाओं की भागीदारी

जलवायु परिवर्तन और मौसम की अनिश्चितता का प्रभाव वर्षा आधारित कृषि पर पड़ता है। समय पर मौसम की जानकारी मिलने से किसान बुवाई, सिंचाई, उर्वरक प्रयोग, कीट प्रबंधन और कटाई संबंधी निर्णय बेहतर तरीके से ले सकते हैं। आदिवासी महिला किसानों तक स्थानीय भाषा में मौसम आधारित कृषि सलाह पहुंचाना उपयोगी होगा।

उदाहरण:

- भारी वर्षा से पहले खेतों में जल निकासी।
- वर्षा की संभावना होने पर अनावश्यक सिंचाई रोकना।
- तेज हवा की संभावना में फसल एवं पशुधन की सुरक्षा।
- उपयुक्त मौसम में ही कीटनाशी का प्रयोग।
- कटाई योग्य फसल को वर्षा से पहले सुरक्षित करना।

19. कृषि प्रशिक्षण एवं कौशल विकास

आदिवासी महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम केवल कृषि उत्पादन तक सीमित नहीं होने चाहिए। प्रशिक्षण में उत्पादन के साथसाथ उद्यमिता और बाजार को भी शामिल करना आवश्यक है।-

प्रशिक्षण के संभावित विषय

- उन्नत फसल उत्पादन
- प्राकृतिक खेती
- जैविक खाद निर्माण
- वर्मी कम्पोस्ट
- मशरूम उत्पादन
- पोषण वाटिका
- पशुपालन
- बकरी पालन
- मुर्गी पालन
- खाद्य प्रसंस्करण
- पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग
- डिजिटल मार्केटिंग
- वित्तीय साक्षरता
- मौसम आधारित कृषि
- कृषि यंत्रीकरण
- FPO एवं SHG से जुड़ाव

कृषि विज्ञान केंद्र जैसे संस्थान महिला किसानों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

20. आदिवासी महिला किसान एवं जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान में वृद्धि, वर्षा की अनिश्चितता, सूखा, अत्यधिक वर्षा तथा नए कीट एवं रोग जैसी समस्याएँ कृषि को प्रभावित कर सकती हैं। आदिवासी महिला किसानों के लिए जलवायुस्मार्ट कृषि तकनीकों को बढ़ावा - देना उपयोगी हो सकता है।

संभावित उपाय

- सूखा सहनशील फसलोंकिस्मों का चयन।/
- फसल विविधीकरण।
- मिश्रित खेती।
- कृषि वानिकी।
- जल संरक्षण।
- मल्चिंग।
- जैविक पदार्थों का उपयोग।

- पोषण वाटिका।
- पशुपालन का समावेश।
- मौसम आधारित कृषि सलाह।

21. महिला किसान उत्पादक संगठन की भूमिका

महिला किसानों को संगठित करके किसान उत्पादक संगठन या अन्य सामूहिक संस्थाओं से जोड़ा जा सकता है। इससे छोटे किसानों की सामूहिक खरीद और बिक्री की क्षमता बढ़ सकती है। महिला किसान समूह सामूहिक रूप से:

इनपुट खरीद → उत्पादन → संग्रहण → प्रसंस्करण → पैकेजिंग → बाजार

की पूरी प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं। इससे बिचौलियों पर निर्भरता कम करने, बाजार जानकारी प्राप्त करने और सामूहिक सौदेबाजी की क्षमता विकसित करने के अवसर मिल सकते हैं।

22. आदिवासी महिलाओं का नेतृत्व एवं निर्णय क्षमता

महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिलाओं की आय बढ़ाना नहीं है। परिवार एवं समुदाय में निर्णय लेने की क्षमता भी महत्वपूर्ण है। कृषि संबंधी निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जानी चाहिए, जैसे:

- कौनसी फसल लगानी है-?
- कौन सा-बीज खरीदना है?
- खाद एवं उर्वरक का प्रबंधन कैसे करना है?
- कृषि उत्पाद कब बेचना है?
- आय का कितना हिस्सा कृषि में पुनः निवेश करना है?
- कौनसा कृषि उद्यम शुरू करना है-?

महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करने से कृषि परिवारों की संसाधन प्रबंधन क्षमता मजबूत हो सकती है।

23. आदिवासी महिला और पारंपरिक ज्ञान

आदिवासी महिलाओं के पास स्थानीय जैव संसाधनों और खाद्य पदार्थों के संबंध में पारंपरिक ज्ञान का महत्वपूर्ण भंडार हो सकता है। यह ज्ञान निम्न क्षेत्रों में उपयोगी है:

- स्थानीय खाद्य पौधों की पहचान।
- बीज संरक्षण।
- स्थानीय फसल विविधता।
- पारंपरिक खाद्य प्रसंस्करण।
- प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग।
- पशु देखभाल।
- स्थानीय मौसम संकेतों की समझ।

- घरेलू स्तर पर खाद्य संरक्षण।

इस ज्ञान का वैज्ञानिक दस्तावेजीकरण और उचित सम्मान आवश्यक है।

24. आदिवासी महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की रणनीति

आदिवासी महिला किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए बहुआयामी रणनीति अपनाई जानी चाहिए।

प्रमुख रणनीति कौशल: विकास बाजार + मूल्य संवर्धन + समूह संगठन + वित्तीय समावेशन + तकनीकी प्रशिक्षण + महिला आर्थिक सशक्तिकरण = संपर्क।

इसके अंतर्गत:

1. महिला किसानों की पहचान एवं पंजीकरण।
2. कृषि प्रशिक्षण।
3. महिलाअनुकूल कृषि यंत्रों का प्रदर्शन।-
4. स्वयं सहायता समूहों को तकनीकी सहयोग।
5. बैंकिंग एवं वित्तीय साक्षरता।
6. कृषि आधारित छोटे उद्यम।
7. उत्पादों का मूल्य संवर्धन।
8. पैकेजिंग एवं ब्रांडिंग।
9. स्थानीय एवं डिजिटल बाजार से संपर्क।
10. सफल महिला किसानों के अनुभवों का प्रसार।

25. कृषि में आदिवासी महिलाओं के योगदान का व्यापक महत्व

आदिवासी महिलाओं का कृषि में योगदान केवल आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है। यह ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था, खाद्य सुरक्षा, पोषण, जैव विविधता और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण से भी जुड़ा हुआ है।

उनकी भागीदारी से:

- कृषि परिवारों की आय में योगदान होता है।
- परिवार की खाद्य सुरक्षा मजबूत होती है।
- स्थानीय बीज एवं जैव विविधता संरक्षित हो सकती है।
- कृषि संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है।
- पशुपालन एवं कृषि का एकीकरण होता है।
- घरेलू स्तर पर मूल्य संवर्धन संभव होता है।
- ग्रामीण रोजगार के अवसर विकसित होते हैं।
- महिला नेतृत्व को बढ़ावा मिलता है।

26. निष्कर्ष:

आदिवासी महिलाएँ कृषि एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण आधारशिला हैं। खेत की तैयारी से लेकर बुवाई, निराई-गुड़ाई, कटाई, मड़ाई, भंडारण तथा कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण तक उनका योगदान व्यापक है। इसके साथसाथ पशुपालन-, लघु वनोपज, खाद्य सुरक्षा, पोषण, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और घरेलू अर्थव्यवस्था में भी उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। फिर भी उनकी भूमिका के अनुपात में उन्हें तकनीकी, आर्थिक और संस्थागत अवसर हमेशा पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हो पाते। इसलिए आदिवासी महिला किसानों को केवल कृषि श्रमिक के रूप में नहीं बल्कि, ***"महिला किसान, उद्यमी और निर्णयकर्ता"*** के रूप में पहचानना आवश्यक है। कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषि विश्वविद्यालयों, स्वयं सहायता समूहों, किसान उत्पादक संगठनों, सरकारी विभागों तथा अन्य संस्थाओं के समन्वित प्रयासों से महिलाओं तक उन्नत कृषि तकनीक, मौसम आधारित सलाह, कृषि यंत्रीकरण, वित्तीय सेवाएँ, प्रशिक्षण और बाजार सुविधाएँ पहुंचाई जा सकती हैं। यदि आदिवासी महिलाओं को ***ज्ञान, कौशल, संसाधन, तकनीक, वित्त और बाजार*** तक बेहतर पहुंच प्रदान की जाए, तो वे न केवल अपने परिवार की आय एवं खाद्य सुरक्षा को मजबूत कर सकती हैं, बल्कि आदिवासी क्षेत्रों में टिकाऊ कृषि, ग्रामीण उद्यमिता और समावेशी विकास की महत्वपूर्ण वाहक बन सकती हैं। इस प्रकार ***आदिवासी महिलाओं का सशक्तिकरण केवल महिला विकास का विषय नहीं है, बल्कि कृषि विकास, खाद्य सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधन संरक्षण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण*** का भी महत्वपूर्ण आधार है।

१. डॉ. विनय कुमार सिंह, मृदा वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र झाबुआ
२. डॉ. ज्ञान माला सिंह, देवी अहिल्या विष्वविद्यालय, पदम कॉलेज ऑफ एजुकेषन, झाबुआ मध्य प्रदेष
३. श्री प्रियेष प्रकाष सिंह, YP -1 IARI New Delhi
४. श्री बापु हिहोर, मृदा परिक्षण प्रयोगषाला कृषि विज्ञान केन्द्र झाबुआ